धार्मिक बाल त्रैमासिक पत्रिका

चहकती चेतना

वर्ष- 13वां अंक 50 संपादक - विराग शास्त्री, जबलपुर RNI NO. : MPHIN33094

नायशा अमित जैन, सिंगापुर

सार्थ अजीत जैन, मलाड, मुम्बई

गौरवमयी 50वे अंक का प्रकाशन

प्रकाशक - सूरज बेन अमुलखराय सेठ स्मृति ट्रस्ट, मुंबई
संस्थापक - आचार्य कुन्दकुन्द सर्वोदय फाउन्डेशन, जबलपुर (म.प्र.)

तत्वज्ञान से सुरभित हो, अपना यह परिवार, रिश्ते सदा संवारिये, सुख शान्ति हर द्वार।
साधर्मी साधर्मी मिलें, हो रिश्तों में सुगन्ध, मोक्षमार्ग प्रशस्त हो, हो ऐसा सम्बन्ध।।

क्या आप अपने बेटे या बेटी के लिये योग्य संबंध खोज रहे हैं ?
क्या आप चाहते हैं कि आपको बहू या दामाद ऐसा मिले जो रात्रि भोजन त्याग, जमीकंद त्याग और जिनशासन के सिद्धांतों के प्रतिनिष्ठा वाला हो ?

तो अवसर आ गया है अब चूकना योग्य नहीं है अवश्य पधारिये

मुमुक्षु मंडप 2019

तत्वज्ञान से संस्कारित परिवारों के लिये मंगल आयोजन

परिचय सम्मेलन में

आप सबको जानकर प्रसन्नता होगी कि तत्वज्ञान से जुड साधर्मी परिवारों के विवाह संबंधी कार्य को आसान बनाने के उद्देश्य से मुमुक्षु मंडप का आयोजन किया जा रहा है । इस अवसर पर मुमुक्षु मंडप परिचय पुस्तिका का प्रकाशन किया जायेगा । इसमें परिचय प्रकाशित करने के इच्छुक साधर्मी Whatsapp 9752756445 से फार्म प्राप्त करें । कार्यक्रम में पधारने वाले साधर्मियों के आवास और भोजन की समुचित व्यवस्था की जायेगी ।

आयोजन तिथि - रविवार, 21 अप्रैल 2019

स्थान - दीनदयाल नगर, मकरोनिया, सागर म.प्र.

आयोजक - मुमुक्षु मंडप आयोजन समिति, मध्यप्रदेश
अखिल भारतीय जैन युवा फैडरेशन, मध्यप्रदेश

सहयोगी - सर्वोदय ज्ञानपीठ जबलपुर

संपर्क - 9826051138, 9425816135, 9300642434, 8442074031

ईमेल - mandap2019@gmail.com

आध्यात्मिक, तात्विक,
धार्मिक एवं नैतिक
बाल त्रैमासिक पत्रिका

चहकती चेतना

प्रकाशक
श्रीमति सूरजबेन अमुलखराय सेठ
स्मृति ट्रस्ट, मुम्बई

संस्थापक
आचार्य कुन्दकुन्द सर्वोदय फाऊन्डेशन,
जबलपुर म.प्र.

संपादक
विराग शास्त्री, जबलपुर

प्रबंध संपादक
स्वस्ति विराग शास्त्री, जबलपुर

डिजाइन/ग्राफिक्स
गुरुदेव ग्राफिक्स, जबलपुर

परमशिरोमणि संरक्षक
श्रीमती स्नेहलता धर्मपत्नि जैन बहादुर जैन, कानपुर
डॉ. उज्जवला शहा–पंडित दिनेश शहा, मुम्बई
श्री अजित प्रसाद जी जैन, दिल्ली,
श्री मणिभाई कारिया, ग्रांट रोड, मुंबई
कु. अनन्या सुपुत्री श्री विवेक जैन बहरीन

परम संरक्षक
श्री अनंतराय ए.सेठ, मुम्बई, श्री प्रेमचंद बजाज, कोटा
श्रीमति आरती पुष्पराज जैन, कन्नौज उ.प्र.

संरक्षक
श्री आलोक जैन, कानपुर, श्री सुनील भाई जे. शाह, भायंदर, मुम्बई
Agraeta Technik P. Ltd., Virar, Thane MH.
श्री निमित्त शाह, कनाडा

1	सूची	1
2	कविता – चेतन वन	2
3	संपादकीय	3
4	सिद्धक्षेत्र – गोपाचल	4
5	८००० जैन मुनियों...	5
6	चार्जिंग में लगे मोबाईल ...	9
7	पति पत्नि और मोबाईल	7
8	प्रेरक प्रसंग– कोंड कुंद/नीति	8
9	इतिहास के पन्नों से – मकबरा जो जैन मंदिर था	9
10	भरत से भारत कब...	10
11	नन्हीं प्रतिभा – नित्या जैन	11
12	Russian Jain Scholar	12
13	एक विवाह ऐसा भी	13
14	स्वर्ग से सुंदर अनुपम	14
15	कथा सुनो पुराण की – परिणाम	15
16	आई मंगल घड़ी	16
17	जिनशासन की प्रभावना	17
18	कहान के बचपन के प्रसंग	18
19	बंदर और टी.वी.	19–20
20	पत्ता गोभी....	21–22
21	स्नेह हो तो ऐसा	23–24
22	आप मुझे संस्कार हो	25–26
23	समाचार	27–28
24	कोई लाख करे चतुराई....	29–30
25	जन्मोत्सव	31
26	४२वा आध्यात्मिक शिक्षण शिविर	32

प्रकाशकीय व संपादकीय कार्यालय
''चहकती चेतना''
सर्वोदय, 702, जैन टेलीकॉम,
फूटाताल, लाल स्कूल के पास, जबलपुर म.प्र. 482002
9300642434, 7000104951
chehaktichetna@yahoo.com

मुद्रण व्यवस्था
स्वस्ति कम्प्यूटर्स, जबलपुर

सदस्यता शुल्क -500/- रु. (तीन वर्ष हेतु)
1500/- रु. (दस वर्ष हेतु)

सदस्यता राशि अथवा सहयोग राशि आप ''चहकती चेतना'' के नाम से ड्राफ्ट/चैक/मनीआर्डर से भेज सकते हैं। आप यह राशि कोर बैंकिंग से ''चहकती चेतना'' के बचत खाते में जमा करके हमें सूचित सकते हैं।
पंजाब नेशनल बैंक, फुहारा चौक, जबलपुर
बचत खाता क्र.- 1937000101030106
IFS CODE : PUBN0193700

चहकती चेतना के पूर्व प्रकाशित संपूर्ण अंक प्राप्त करने के लिये लॉग ऑन करें
www.vitragvani.com

मंगल कवितायें -

चेतन वन

शोर हुआ जब चेतन वन में, हाथी दादा आये।
सभी जानवर उनसे पूछे, चूहे भी हर्षाये।।
हाथी दादा उछल रहे थे, सबको बात बताने।
महाभाग्य मुनिराज पधारे, मंगल मंत्र सुनाने।।
चलों चलें सब दर्शन करने, भक्ति भाव जगायें।
श्री मुनिवर से सभी कहेंगे, हित की बात सुनायें।।

खुशहाली

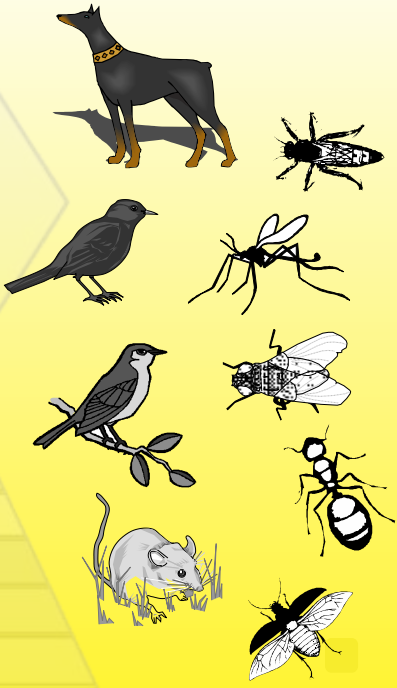

कौआ काला कोयल काली,
काली पर मतवाली है।
चीनू कुत्ता घर में बैठा,
करता वह रखवाली है।।
चींटी, चूहा, मच्छर, मक्खी,
जीने के हैं अधिकारी।
हिंसा इनकी कभी न करना,
सबको जान है प्यारी।।
सत्य अहिंसामय हो जीवन,
इनसे ही खुशहाली।
दया भाव सब मन में धारें,
बनें मोक्ष अधिकारी।

रचनाकार- विराग शास्त्री, जबलपुर

संपादकीय

बच्चों को संस्कारित करने के पहले माता-पिता को संस्कारित होना होगा

आज सभी माता-पिताओं को अपने बच्चों को संस्कारित करने की चिन्ता है और इसके लिये वे अनेक तरह के प्रयास भी कर रहे हैं। अभिभावक स्वयं को संस्कारवान मानकर अपने बच्चों के व्यवहार की वह अपेक्षा रखते हैं जो शायद उनमें भी नहीं हैं। हर पिता को राम जैसा बेटा चाहिये पर स्वयं राम बनकर आदर्श बनने की कोई रुचि नहीं है। छोटी उम्र के बच्चों के लिये शब्दों की भाषा कार्यकारी नहीं होती बल्कि बड़ों का आचरण ही उनकी पाठशाला है । मानव स्वभाव के बारे में अध्ययन करने वाले वैज्ञानिकों और शिशु विशेषज्ञ डाक्टरों का कहना है कि 6 माह का बच्चा भी अपने सामने होने वाले व्यवहार से तेजी से सीखता है और हम तो 5 साल के बच्चे को छोटा जानकर मनमाना आचरण करते रहते हैं। यदि हम पानी छानकर पी रहे हैं, जिनमंदिर जाते हैं, अपने से बड़ेजनों को सम्मान देते हैं, जमीकन्द आदि का सेवन नहीं करते, वाणी में विनम्रता प्रयोग का प्रयोग करते हैं तो यह जीवन्त शिक्षा होगी। इन संस्कारों के लिये हमें अलग से कोई प्रयास नहीं करने होंगे।

अपने परिवार या साथियों से तू-तुम की भाषा का प्रयोग, असभ्य तरीके से हंसना, पति-पत्नी का सामान्य बातों पर ही बच्चों के सामने झगड़ना, शादी आदि समारोह में मर्यादा भूलकर डांस करना, बच्चों के साथ टीवी पर अश्लील दृश्य आदि देखना क्या संस्कार प्रेरक बातें हैं ? साथ ही नये फैशन की अंधी दौड़ में बच्चों को अंग दिखाने वाले कपड़े पहनाना या स्वयं ऐसे वस्त्र पहनना क्या शील का घात नहीं है ? एक ओर हम चाहते हैं कि हमारे परिवार की बेटियाँ कोई ऐसा काम नहीं करें जिससे परिवार और समाज को शर्मिन्दा नहीं होना पड़े वहीं दूसरी ओर हम उसके विरुद्ध अपना आचरण कर रहे हैं। हमारे अच्छे आचरण के बाद भी यदि कोई अनहोनी होती है तो कम से कम हमें इस बात का संतोष रहेगा कि हम अपने बच्चों के सामने सदा अच्छे आदर्श के रुप में प्रस्तुत हुये।

जिस तेजी से सामाजिक वातावरण बदल रहा है उतनी ही तेजी से हमें अपने संस्कारों को दृढ़ करने की आवश्यकता है। मेले में बढ़ती भीड़ के साथ बच्चे के हाथ माँ की उंगली को जोर से पकड़ लेते हैं। उसे बच्चे को पता है कि यदि मेरी माँ कहीं खो गई तो मैं अनाथ होकर दुःख भोगता रहूँगा। ऐसे ही बढ़ती भौतिकता के मेले में हम सबको अपने संस्कारों के प्रति और अधिक दृढ़ होना चाहिये।

जीवन की प्राथमिकता अपना परिवार और धन का अर्जन मात्र है। धन के लिये न्याय-अन्याय का विचार नहीं होता। हम अपने बच्चों को स्कूल और होमवर्क आदि के लिये प्रेरित करते हैं तो क्या उसका 5 प्रतिशत भी हम संस्कारों, पाठशाला या जिनमंदिर जाने के लिये प्रेरित करते हैं।

हमें इन सब बातों पर गहराई से विचार करना होगा । तभी हम अपने बच्चों के सुंदर एवं सुरक्षित भविष्य निर्माण करने में सहयोग दे पायेंगे ।

– विराग शास्त्री

हमारे तीर्थ क्षेत्र

सिद्धक्षेत्र गोपाचल

मध्यप्रदेश के प्रमुख नगर ग्वालियर के अंचल में विराजमान गोपाचल पर्वत है। बीसवें तीर्थंकर श्री नमिनाथ भगवान के शासनकाल में सुप्रतिष्ठित केवली हुये। इन्हें शौरीपुर में केवलज्ञान हुआ और गोपाचल की भूमि से निर्वाण हुआ। इस गोपाचल की भूमि से अनेक तीर्थंकरों का विहार हुआ, भगवान पार्श्वनाथ की देशना हुई और श्रुतकेवली भद्रबाहु भी यहाँ पधारे। सम्राट चन्द्रगुप्त मौर्य भी यहाँ पर गिरनार जाते समय रुके थे। आचार्य पूज्यपाद ने निर्वाण भक्ति के बाद अनेक वन्दनाओं में गोपाचल का वर्णन किया है। बाद में तोमरवंशी राजा वीरमदेव, राजा डूंगरसिंह व राजा कीर्तिसिंह और श्रेष्ठी श्रावकों ने बहुत धन व्यय करके 26 गुफाओं में विशाल प्रतिमाओं का निर्माण कराया। पर्वतराज पर लगभग 1500 प्रतिमायें हैं। ये प्रतिमायें 6 इंच से लेकर 57 फुट तक की हैं। यहाँ भगवान पार्श्वनाथ की 42 फुट ऊंची, 30 फुट चौड़ी विशाल प्रतिमा है। कुछ प्रतिमायें अधूरी बनीं हुईं हैं। इन प्रतिमाओं का निर्माण लगभग सन् 1398 से सन् 1536 के मध्य हुआ। यहाँ अनेक भट्टारकों का भी निवास रहा है। इस क्षेत्र का इतिहास में विशेष महत्व है।

सन् 1557 में क्रूर मुस्लिम राजा बाबर की सेना देश के अनेक मंदिरों को तोड़ती हुई ग्वालियर पहुँची और उसने ग्वालियर के किले पर अधिकार कर लिया और जब उस ने सेना गोपाचल की मूर्तियाँ पर हथौड़ों के प्रहार से अनेकों मूर्तियों के सिर तोड़ दिये और अनेक प्रतिमाओं के हाथ-पैर खंडित कर दिये।

वर्तमान में यह भारत सरकार के संरक्षण में है। तलहटी में अतिमनोज्ञ दो जिनालय भी निर्मित है। इस क्षेत्र के दर्शन कर जैन पूर्वजों की अपूर्व भक्ति और जैनत्व के गौरव का अनुभव होता है।

ग्वालियर के लिये देश के लगभग सभी नगरों से ट्रेन सुविधा उपलब्ध है।
गोपाचल संपर्क सूत्र - 0751-24277778, 2420964

8000 जैन मुनियों की हुई हत्या

जैन समाज और जैन मुनियों पर धर्म के द्वेष के कारण भयंकर उपसर्ग किये गये। मुस्लिम शासकों ने जैनियों को धर्म परिवर्तन कर मुसलमान बनने का आदेश दिया, इसके लिये उन्हें भयंकर यातनायें दीं गईं, यहाँ तक उनकी हत्या तक की गई।

भारतीय इतिहास की सबसे जघन्य घटना हुई थी तमिलनाडु के मदुरै शहर के पास समन्नाथम नाम के स्थान पर। जैन धर्म से द्वेष रखने वाले विरोधियों ने जैनियों और जैन मुनिराजों को बहुत कष्ट दिये गये। अत्याचारों का प्रारम्भ सातवीं शताब्दी से हुआ। उस समय मदुरै का राजा कूण पांडियन था। जन्म से कुबड़ा होने के कारण उसे कूण कहा जाता था। यह राजा पहले जैन धर्म को मानता था पर बाद में वह हिन्दू हो गया। फिर रानी मंगाईक्कारासी और मंत्री कुल्चाराइ नयनार के कहने पर सभी जैन धर्मियों को हिन्दू धर्म अपनाने के मजबूर किया गया। जैन मुनियों द्वारा धर्म परिवर्तन करने से मना करने पर राजा ने तीखी नोंक वाली फांसी पर चढ़ाने का आदेश दिया। इस कारण राजा ने 8000 साधुओं की हत्या करवा दी।

मदुरै के मीनाक्षी मंदिर की दीवालों पर आज भी इस घटना के चित्र बने हुये हैं। अब इन चित्रों पर सफेदी पोतकर इसे छिपाने का प्रयास किया गया है और इन चित्रों को देखने पर प्रतिबंध लगा दिया गया है। भारत के प्रसिद्ध विद्वानों और इतिहासकारों ने इस घटना को स्वीकार किया है। उस घटना को जैनों पर विजय के रूप में याद करते हुये मदुरै में आज भी चैत्र माह में 5 दिन का महाउत्सव मनाया जाता है। दक्षिण भारत के कई हिन्दू मंदिरों में आज भी सूली की पूजा की जाती है। मीनाक्षी मंदिर भी पहले जैन मंदिर था, इसके साथ-साथ अनेक जैन मंदिरों की प्रतिमाओं को हिन्दू देवी-देवताओं में परिवर्तित कर दिया गया। मंदिरों को हिन्दू संस्कृति के रूप में परिवर्तित कर दिया गया।

इस घटना के प्रमाण प्रसिद्ध तमिल शास्त्र पेरिया पुराणम में भी मिलते हैं। यह काव्य शिव के परम भक्त तमिल कवि सेक्किलर द्वारा लिखा गया है। यह काव्य सन् 1150 में लिखा गया था।

चेतावनी -

चार्जिंग में लगे मोबाइल पर बात करने से

बैटरी फटी, आँख की रोशनी गई और हाथ के टुकड़े- टुकड़े हुये

हम समय - समय पर ऐसे लेखों के माध्यम से आपको सावधान करते रहे हैं। मोबाइल से होने वाली अनेक घटनायें हमें चेतावनी देने का कार्य करतीं हैं, पर अधिकतर बच्चे और युवा इन पर ध्यान नहीं दे रहे हैं। नतीजा भयंकर दुर्घटनायें होतीं हैं और फिर मात्र पछताना ही शेष रह जाता है।

जबलपुर की यह घटना रोंगटे खड़ी करने वाली है। जबलपुर के पास उमरिया के चांदिया कौड़िया गांव में रहने वाले 19 वर्ष का रामचरित चार्जिंग में लगे फोन से बात कर रहा था तभी अचानक मोबाइल की बैटरी में एक धमाका हुआ और विस्फोट के साथ उसके दायें हाथ का पंजा टूटकर बिखर गया और दाईं आंख में गहरा घाव होने से हमेशा के लिये आंख की रोशनी चली गई। साथ ही बैटरी के कण पूरे चेहरे और सीने में धंस गये।

एक लापरवाही ने रामचरित के पूरे जीवन को मुश्किल बना दिया। लोगों की मान्यता के विपरीत बड़ी और ब्रान्डेड कम्पनी के मोबाइल मे भी यह घटनायें कई बार हो चुकीं हैं। इसलिये सावधानी ही सुरक्षा का उपाय है।

साथ ही मोबाइल आज सुविधा के साथ संस्कार के पतन का भी कारण बन रहा है। आज के बच्चे स्मार्ट हैं। इंग्लिश मीडियम स्कूलों में पढ़ने और आज के तकनीकी समय में बच्चे एडवांस हो रहे हैं। बच्चे अब लाइव एप का भी प्रयोग रहे हैं। जिस मोबाइल देकर माता-पिता मात्र समय पास करने का माध्यम मानकर बच्चों को निश्चिंत छोड़ देते हैं वह ही मोबाइल हमारे घरों में घुसकर संस्कारों का सत्यानाश कर रहा है। आज के समय में बिगो लाईव, टिक टॉक, लाइवली, क्वाई और लाइवमी जैसे एप्स अश्लील सामग्री दे रहे हैं। इस कारण से बच्चों के व्यवहार में परिवर्तन देखने को मिल रहा है। युवा वर्ग तो इन एप पर दिन भर में 17 से 20 घंटे लाईव रहते हैं। इन एप्स के आज देश में लगभग 6 करोड़ यूजर्स हैं। इनसे स्वयं और बच्चों को बचाने की बहुत आवश्यता है।

इसलिये अपने बच्चों से दोस्ताना सम्बन्ध बनायें और उन पर नजर रखें। उन्हें इन एप्स के बुरे प्रभावों के बारे में जानकारी दें। यही सर्वोत्तम उपाय है।

मानो न मानो बात सच्ची है -

पति-पत्नि और मोबाईल

पति पत्नी और मोबाइल..... और कुटुम्ब न्यायालय। भोपाल में अपनी-अपनी शिकायत लेकर पति-पत्नी पहुँचे कोर्ट। मामला तलाक तक पहुँच गया कारण मोबाईल। पत्नी का कहना था कि मेरे पति खुद तो स्मार्ट फोन चलाते हैं और मुझे सादा फोन दे दिया। और भी कई शिकायतें...। पति का कहना था कि पत्नी मायके से स्मार्ट फोन लाई थी। पर सोशल मीडिया और सेल्फी के चक्कर में घर में खाना तक नहीं बन पाता, कई बार माता-पिता को ब्रेड खाकर पेट भरना पड़ता है। घर में झगड़े होने लगे थे। इसलिये मैंने फोन छुड़ा लिया।

जज आर.एन.चंद ने पत्नी को समझाते हुये पत्नी के कर्तव्य बताते हुये परिवार को प्राथमिकता देने की सलाह दी और पति को स्मार्ट फोन दिलवाने का आदेश दिया। अंत में दोनों ने समझौता कर लिया।

पत्नी ने पति के सामने सात शर्तें रखीं। जिसमें साल में एक बार भोपाल से बाहर घुमाना, 15 दिन में एक बार फिल्म दिखाना, मायके फोन करने देना, हर माह खर्च के लिये रुपये, मायके वालों की एक शब्द भी बुराई न करना आदि शमिल था। काउंसलर सरिता राजानी ने पति की भी कुछ शर्तें पत्नी से मानने के लिये कहा और पत्नी ने वे शर्तें मानीं तब जाकर दोनों में समझौता हुआ।

यह घटना सुनकर लगता है कि आने वाले समय में ये सम्बन्ध प्रेम के आधार पर नहीं, बल्कि शर्तों पर निभाये जायेंगे।

नजरिया

माँ! कचरे वाला आया है, कचरा दे दो।

बेटा! ऐसा नहीं बोलते, कचरे वाले तो हम हैं, वो तो सफाई वाला है। जैसे सब्जी वाला सब्जी रखता है, किराना वाला किराना रखता है, दूधवाला दूध रखता तो हम कचरे रखने वाले क्या हुये कचरे वाले ना... और वह तो सफाई करने वाला है तो सफाईवाला वही हुआ ना।

यह बात सुनकर बेटा माँ को देखता ही रह गया।

प्रेरक प्रसंग

कोंडकुन्द

एक व्यक्ति को जैन धर्म से बहुत द्वेष था। वह आचार्य कुन्दकुन्द से भी बहुत द्वेष रखता था। एक दिन उसने आचार्य कुन्दकुन्द के तप करने वाली गुफा में शराब का घड़ा रख दिया और राजा के पास जाकर आचार्य कुन्दकुन्द की शिकायत कर दी। राजा के आदेश पर सैनिकों ने वहाँ जाकर देखा तो वहाँ चमेली के फूलों से भरा हुआ घड़ा रखा हुआ है और पूरी गुफा में उसकी सुगंध फैली हुई थी। राजा को यह जानकर उस शिकायत करने वाले व्यक्ति पर बहुत क्रोध आया परन्तु आचार्य कुन्दकुन्द बोले - गल्ती करने वाला अपराधी क्षमा का पात्र होता है। आचार्यश्री के वचन सुनकर राजा ने उसे क्षमा कर दिया।

कोंड का अर्थ होता है शराबद और कुन्द का अर्थ होता है पुष्प। आचार्यश्री के तप के प्रभाव से गुफा में शराब पुष्प बन गई इसलिये उन्हें कोंडकुन्द नाम प्राप्त हुआ। अनेक शिलालेखों में इस नाम का उल्लेख प्राप्त होता है।

नीति

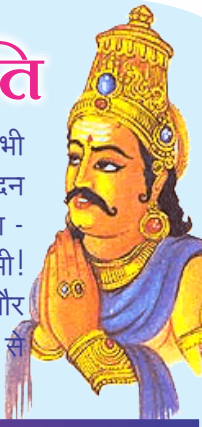

युद्धक्षेत्र में रावण राम के प्रति बुरे शब्द बोल रहा था। बुरे वचन सुनकर भी राम बहुत शांत थे। विभीषण यह देखकर बहुत दुःखी हो रहे थे उन्होंने राम से निवेदन किया कि आप उस दुष्ट रावण पर शस्त्र से प्रहार क्यों नहीं करते ? राम ने कहा - क्षत्रिय, मृतकों पर मरे हुये पर प्रहार नहीं करते। विभीषण ने आश्चर्य से पूछा - स्वामी! रावण तो अभी जीवित है तो राम ने कहा - क्रोध, मान आदि के आवेग में मृतक और जीवित में कोई अन्तर नहीं रह जाता क्योंकि इस अवस्था में मनुष्य ज्ञान और विवेक से शून्य हो जाता है। उसे अपने अच्छे - बुरे का ज्ञान नहीं होता।

उम्र बढ़ने से लगन कमजोर नहीं होती 86 वर्ष की उम्र में डॉक्टर ऑफ साइंस

जब 86 वर्ष की उम्र में ढंग से खड़ा नहीं हुआ जाता, भूलना सहज आदत बन जाता है, शरीर कमजोर होने लगता है इस उम्र में भी कमाल कर दिखाया सूरत निवासी डॉक्टर धनकुमारजी जैन ने। मूल रूप से राजस्थान के निवासी डॉ. धनकुमारजी ने गणित के सूत्रों की गहरी व्याख्या करते हुये ''मॉडर्न मैथेमेटिकल एनालिसिस ऑफ त्रिलोकसार'' विषय पर डॉक्टर ऑफ साइंस की उपाधि प्राप्त की। एकेडमिक क्षेत्र में शोध के लिये मिलने वाली यह सर्वोच्च उपाधि है। उनकी इस उपलब्धि के लिये उन्हें गोल्डन बुक ऑफ रिकार्डस में स्थान दिया गया है।

जैनधर्म की गहरी रुचि और पकड़ रखने वाले डॉ. धनकुमारजी को 81 वर्ष की उम्र में पीएचडी की उपाधि मिली थी। डॉ, धनकुमारजी की इस नवीनतम उपलब्धि के लिये चहकती चेतना परिवार की ओर से बधाई।

इतिहास के पन्नों से -

मकबरा जो जैन मंदिर था

ग्वालियर के किले में सातवीं - आठवीं शताब्दी में तोमर वंश के राजाओं के समय में अनेक श्रेष्ठी श्रावकों ने अनेक कलापूर्ण जिनप्रतिमाओं का निर्माण कराया। लेकिन क्रूर राजाओं ने सन् 1008 में महमूद गजनवी, सन् 1233 में अल्तमश ने इन प्रतिमाओं को नष्ट करने का प्रयास किया। बाद में बाबर के आदेश पर 25 सितम्बर 1529 को सैनिकों ने जिनप्रतिमाओं के हाथ-पैर खण्डित कर दिये। किले के अन्दर प्रतिमाओं के पास एक मकबरा है। बाबर के पूर्व ग्वालियर किला इब्राहिम लोदी के सूबेदार तातार खाँ के अधिकार में था। शेख मोहम्मद गौस की मदद से बाबर ने किले पर कब्जा कर लिया। अकबर के मन में शेख का बहुत सम्मान था। शेख की मृत्यु के तुरन्त बाद अकबर ने शेख का स्मारक बनवाकर उसमें दफन करने का आदेश दिया। इतनी जल्दी स्मारक बनना संभव नहीं था। इसलिये एक भव्य भवन में शेख का शव को दफना दिया गया। यह भवन दिगम्बर जैन मंदिर था और इसमें भगवान चन्द्रप्रभ की प्रतिमा विराजमान थी। इस मंदिर को बाबर के सैनिकों ने पहले ही नष्ट कर दिया था। इसी मंदिर में शेख मोहम्मद गौस का मकबरा बनाया गया।

कवि खडगराय ने लिखा है -

विधिना विधि ऐसी ढई, सोई भई जु आइ।
चन्द्र प्रभु के धौंहरे, रहे गौस सुख पाइ।।

इसका दूसरा प्रमाण यह है कि इस मंदिर में 15वीं शताब्दी में पत्थर की झिलमिली बनाई गई थी। इसमें कलापूर्ण सुन्दर जाली बनाई गई है। झिलमिली की रचना जैन संस्कृति के अनुसार की गई है।

हमें यह जानकर गर्व होना चाहिये कि पूर्व समय से ही हमारी जैन संस्कृति की विरासत बहुत समृद्ध रही है।

मानो न मानो बात सच्ची है –

भरत से भारत कब, क्यों और कैसे ?

हमारे देश का नाम भारत कब, क्यों और कैसे पड़ा ? इस विषय ऐतिहासिक तथ्य जानना आवश्यक है। अधिकांश विद्वान नाभिराय के पौत्र और राजा ऋषभदेव के पुत्र चक्रवर्ती भरत के नाम से भारत मानते हैं, कुछ विद्वान शकुन्तला के पुत्र भरत के नाम भारत का नाम मानते हैं। 1947 में जब भारत स्वतंत्र हुआ तो भारत की जनता में इण्डिया और हिन्दुस्तान ये दो नाम बहुत प्रसिद्ध हुये। ईसामसीह के जन्म से 376 वर्ष पूर्व यूनानियों ने भारत पर आक्रमण किया। वे अपने भाषा और बोलने की शैली के कारण पंजाब की सिन्धु नदी को 'इंडस' कहते थे, इसी आधार पर 'इण्डिया' नाम प्रसिद्ध हुआ। अंग्रेजों ने भी इसे अपनाया और अपने शासनकाल में इसका प्रयोग किया। इससे पहले हिन्दुस्तान नाम सभी जगह प्रसिद्ध था। अरब देशों के व्यापारी जब भारत आये तो वे सिन्धु नदी को पार करना चाहते थे। वे 'स' का सही उच्चारण नहीं कर पाने के कारण 'सिन्धु' को 'हिन्दु' कहते थे इसलिये नाम पड़ा 'हिन्दुस्तान'। 18 सितम्बर 1949 को संविधान परिषद की बैठक में ये दोनों नाम विदेशी होने के कारण इन्हें स्वीकार नहीं किया गया। अनेक नामों के सुझाव आये तब प्राचीन शास्त्रों में आये हुये हिन्दुस्तान के नाम को खोजना प्रारम्भ किया गया।

भागवत पुराण में उल्लेख है कि सृष्टि की आदि में स्वयंभू मनु के पौत्र नाभिराय थे, उनके ही नाम पर इस देश का नाम 'अजनाभ वर्ष' था। इनके पुत्र ऋषभदेव थे। ऋषभदेव को वैदिक परम्परा में ब्रह्मा, विष्णु और महेश का अवतार माना जाता है। विश्व के कई देशों में ऋषभदेव की बुलगॉड, राकशव, आग्रिव, रैशेफ, आदम आदि अनेक नामों से पूजा की जाती है। इन्हीं ऋषभदेव के सौ पुत्रों में बड़े पुत्र भरत थे। भरत ने सभी छःखण्ड जीतकर प्रथम चक्रवर्ती पद प्राप्त किया। तभी से इन्हीं भरत के नाम से हमारे देश का नाम 'भारत' हो गया।

हमारे देश के संविधान के निर्माण के समय अनेक विद्वानों और प्रथम प्रधानमंत्री पण्डित जवाहरलाल नेहरु ने 'भारत' नाम ही स्वीकार किया। विद्वानों ने कहा - 'भारतः भरतानां देशः'। इसका उल्लेख हिन्दुओं के वैदिक ग्रन्थ ऋग्वेद और अन्य ग्रन्थों में है। भरत सूर्यवंशी है। इस देश का नाम सूर्यवंशी भरत के नाम भारत है, चन्द्रवंशी भरत के नाम पर नहीं। भारत जाति का युद्ध आर्य जाति के साथ हुआ था। शकुन्तला के पुत्र चन्द्रवंशी भरत के सैकड़ों वर्ष पूर्व भी भारत जाति भारत में थी। गीता जैसे प्रसिद्ध हिन्दू ग्रन्थ में भी ऋषभदेव और भरत का वर्णन मिलता है। ''चतुर्विद्या भजन्ते माजना सुकृतिनोर्जुन । आर्तो जिज्ञासुरथार्थी ज्ञानी व

भरतैशभ।'' वैदिक ग्रन्थों में प्रजापति ऋषभदेव के ज्येष्ठ पुत्र भरत को देश के नाम भारतवर्ष का मूल आधार माना गया है। अग्नि पुराण (10/10-11), मार्कण्डेय पुराण (पं.-39-42), नारद पुराण पूर्व खंड, (अध्याय 48), लिंग पुराण (47/19-23), स्कन्दपुराण माहेश्वर कौमार्य खंड (37/57), शिव पुराण (37/57), वायु पुराण पूर्वार्ध (30/50-53), ब्रह्माण्ड पुराण पूर्व (2/14), कूर्म पुराण (अध्याय 49), विष्णु पुराण द्वितीयम अंश (अध्याय 1), वाराह पुराण (अध्याय 76), मत्स्य पुराण (114-5-6), आदि पुराणों के अतिरिक्त श्रीमद भागवत पुराण में स्पष्ट उल्लेख है कि ऋषभ पुत्र भरत महायोगी थे और उन्हीं के नाम पर यह देश भारतवर्ष कहलाया - येशं खुल महायोगी भरतो ज्येष्ठः श्रेष्ठगुणं आसीद्येनेदं वर्ष भारतमिति व्यापदिशन्ति। (5/4/9)

इस तरह से जैनधर्म के साथ प्रायः सभी पुराण-ग्रन्थ एवं अन्य साहित्य भी यह सिद्ध करते हैं कि ऋषभदेव के पुत्र भरत के नाम पर भी इस देश का नाम भारत हुआ।

- शैलेन्द्र जैन

प्रणति-मुद्रा में भरत चक्रवर्ती

नन्ही प्रतिभा - नित्या जैन

नागपुर निवासी 5 वर्षीय कु. नित्या छोटी उम्र में ही कमाल की प्रतिभा की धनी है। जिनधर्म प्रेमी डॉ. सुरेश जैन और डॉ.विमला जैन की नातिन और दिशा जैन की सुपुत्री नित्या अभी के.जी.2 में पढ़ती है। उसे संगीत और गायन में बहुत रुचि है। साथ ही उसे कराटे में ऑरेंज बेल्ट प्राप्त है। इसके साथ वह नियमित जिनमंदिर की पाठशाला जाती है। पाठशाला और परिवार के धार्मिक वातावरण के कारण उसे देव दर्शन स्तुति, तीर्थंकरों के नाम, भगवन्तों के अर्घ्य, अनेक बाल गीत सहित कई धार्मिक चीजें उसे याद हैं।

चहकती चेतना परिवार नित्या के मंगलमय भविष्य की शुभकामना व्यक्त करता है।

Russian Jain Scholar Dr. Natalia Zheleznova

She knows eight languages including Hindi, English, Prakrit & Sanskrit. She has translated many Jain scriptures from Prakrit to Russian. Samaya-saar, Pravachana-saar, Niyama-saar & Panchastikaya-saar to name a few. There are many Jain scriptures lying in the libraries of universities through out Europe, because of her efforts. Currently she is a professor in Moscow University. When asked her about curiously that people always say that one can't survive without eating meat & vodka in that bone chilling cold (-20 degrees), she replied smilingly in hindi, "ye sab to bahane hain"She keeps coming to India to gain more & more knowledge. She is a bachelor, cooks her meal herself & eats before sunset.

- **Nikhil bhai Desai**, Balkeshwar, Mumbai

जैन की परिभाषा

बादशाह जहाँगीर से जैन कवि पण्डित बनारसीदासजी की अच्छी दोस्ती थी। एक बार चर्चा करते हुये बादशाह ने कवि बनारसीदासजी से पूछा - बताओ ! जैन किसे कहते हैं ?

कवि बनारसीदासजी ने उत्तर दिया -

देव तीर्थंकर गुरु यती, आगम केवली बैन।
धर्म अनंत नयात्मक, जो जानै सो जैन।

(तीर्थंकर देव, दिगम्बर गुरु, केवली की वाणी और अनन्त नयों वाले धर्म को जानने वाला ही जैन है।)

जैन की छोटी, पर सटीक परिभाषा सुनकर बादशाह प्रसन्न हो गये।

समाचार

फुटेरा में स्वाध्याय भवन का शिलान्यास सम्पन्न मध्यप्रदेश के दमोह जिले के अंतर्गत फुटेरा ग्राम में दिनांक 27 जनवरी 2019 को श्रीमती कुसुम महेन्द्र गंगवाल एवं डॉ. बासंतीबेन शाह मुम्बई के विशिष्ट आतिथ्य में स्वाध्याय भवन का शिलान्यास विराग शास्त्री के निर्देशन में सम्पन्न हुआ ।

एक विवाह ऐसा भी...

जहाँ चाह - वहाँ राह - इस सूक्ति को सार्थक करना इच्छा शक्ति को व्यक्त करता है। विवाह जैसे पूर्णतः लौकिक कार्यक्रम में भी जिनशासन की प्रभावना की जा सकती है; इसका प्रत्यक्ष उदाहरण देखने मिला **दिनांक 21 फरवरी** को बैंगलोर में। अवसर था जैन समाज के दानवीर भामाशाह श्री भभूतमलजी भण्डारी पौत्र और श्री रमेशजी-मुक्ताजी भण्डारी के पुत्र अर्चित के विवाह समारोह का।

प्रारम्भ से ही सच्चे देव-शास्त्र-गुरू को समर्पित इस परिवार ने जिनशासन की मर्यादा का ध्यान रखते हुये बारात, वरमाला, फेरे, रिसेप्शन, विदाई आदि सम्पूर्ण कार्यक्रम दिन में आयोजित किये। बड़े और सुन्दर लॉन उपलब्ध होने के बाबजूद हिंसा से बचने के लिये घास पर कोई कार्यक्रम आयोजित न कर विशाल विवाह मण्डप में कार्यक्रम आयोजित किया गया। पूरे कार्यक्रम में फूलों का रंचमात्र भी प्रयोग नहीं किया गया। रात्रि में किसी भी प्रकार का भोजन नहीं हुआ। शोध भोजन करने वालों की सर्वोत्तम व्यवस्था की गई।

सामाजिक और धार्मिक कार्यक्रमों में भरपूर दान करने वाले भण्डारी परिवार का पूरे देश में बहुत परिचय है। इस वैवाहिक कार्यक्रम में देश के अनेक उद्योगपति, मूर्धन्य विद्वान और इष्टजन पधारे।भण्डारी परिवार की सामाजिक सक्रियता का ही प्रमाण है कि श्रवणबेलगोला के भट्टारक चारूकीर्ति स्वामी के निर्देश पर लगभग 25 प्रतिनिधि नवयुगल को आशीष देने के आये। फेरे के समय लगभग 900 सम्बन्धी और मित्रगण उपस्थित थे। सभी को विशेष रूप से तैयार पूजन की पुस्तक दी गई, कोई भी व्यक्ति झूठा मुंह नहीं था, सभी चप्पल-जूते उतारकर बैठे और लगभग 1 घंटे तक चले फेरे में सहभागिता की। इस दौरान किसी भी प्रकार का खान-पान नहीं हुआ। संगीत के साथ अनेक भक्तियों और प्रासंगिक उद्बोधन ने इस नीरस कार्यक्रम को अत्यंत प्रभावी बना दिया। सबसे सुखद बात यह थी कि नव युगल ने प्रतिदिन व्यक्तिगत स्वाध्याय का नियम लिया। भोजन में अनेक प्रकार के सुस्वादिष्ट भोजन और व्यंजनों में किसी प्रकार के आलू-प्याज आदि जमीकंद का प्रयोग नहीं किया गया। विवाह में किसी भी प्रकार के पटाखों का प्रयोग नहीं किया गया। कोई फूहड़ नृत्य नहीं किये, डीजे का प्रयोग नहीं किया गया। इस विवाह में पधारने वाले पारिवारिक सम्बन्धियों के साथ सभी मेहमानों के वस्त्रों से अत्यंत शालीनता और सुन्दरता दिख रही थी। फेरे के कार्यक्रम के पश्चात् सभी मेहमानों ने इस कार्यक्रम की हृदय से प्रशंसा की और दोनों परिवारों को ऐसे आयोजन के लिये धन्यवाद दिया।

वधू सौ. समृद्धि के पिता सूरत निवासी श्री वीरेशजी कासलीवाल और माता रश्मिजी कासलीवाल भी अत्यंत सरल परिणामी साधर्मी हैं। उनकी पवित्र भावना और विशुद्धि के फलस्वरूप यह विवाह कार्यक्रम भी जैन शासन की निर्दोष विवाह विधि की प्रसिद्धि का कारण बना।

ज्ञातव्य है कि भण्डारी परिवार ने 1975 में बंगलौर के वलेपेट में पवित्र भावना के फस्वरूप मात्र 11 माह में जिनमंदिर बनवाकर तैयार कर दिया था। इसके सदस्य श्री चम्पालालजी भण्डारी, श्री सुरेश भण्डारी आदि पूरा परिवार अनवरत जिनशासन की सेवा में, साहित्य प्रकाशन आदि कार्यों में निरन्तर योगदान करता रहा है।

चहकती चेतना परिवार की ओर से इस मंगल प्रभावी आयोजन के लिये बधाई और नवयुगल अर्चित और समृद्धि को मंगलमय जीवन के प्रति शुभकामनायें ।

स्वर्ग से सुंदर अनुपम है ये जिनवर का दरबार

जिनमंदिर की मनोहारी झलकियाँ -

इन पक्तियों का सार्थक करता नागपुर की एम्प्रेस सिटी स्थित श्री महावीर स्वामी दिगम्बर जिन मंदिर। नागपुर रेल्वे स्टेशन से चंदकदमों की दूरी पर निर्मित यह भव्य जिनमंदिर अपनी आभा और सौन्दर्य से स्वर्ग से होड़ करता नजर आता है। एम्प्रेस मॉल के पीछे एम्प्रेस सिटी में कदम रखते ही दिखाई पड़ती है भगवान महावीर स्वामी की विशाल 61 इंच पद्मासन प्रतिमा। दर्शन करते समय नजरें उनकी वीतरागता में ही खो जातीं हैं। जिनमंदिर की दीवालों पर आत्मकल्याण का संदेश देतीं पौराणिक कहानियाँ और जिनागम के सिद्धान्त। जिनमंदिर की हर चीज मानों जीवों की भक्ति, विशुद्धि और निर्मल परिणामों को व्यक्त करती है। वात्सल्य स्वरूप जिनमंदिर के तलघर में में साधर्मियों के आराम करने और रुकने की व्यवस्था। आप नागपुर जायें तो इस जिनमंदिर के दर्शन करने का अवसर न चूकें।

कथा सुनो पुराण की -

परिवर्तन

पोदनपुर के राजा विद्युतराज के घर रानी विमलमती के गर्भ से विद्युत्प्रभ का जन्म हुआ। विद्युतप्रभ बचपन से ही साहसी और बलवान था, पर बचपन में बुरी संगति के कारण उसे चोरी की आदत पड़ गई और बढ़ते-बढ़ते वह बहुत से साथियों के साथ बड़ी-बड़ी चोरियाँ करने लगा। जब पिता विद्युतराज को मालूम चला तो उन्होंने उसे बहुत समझाया, डांटा और राज्य देने का प्रस्ताव भी दिया। उन्हें लगा कि वह राजा बनने के लोभ में चोरी जैसा बुरा कार्य छोड़ देगा। पर उन्हें आश्चर्य हुआ कि विद्युतप्रभ ने उनके राज्य देने के प्रस्ताव के लिये मना कर दिया और कहा भले ही आप मुझे राज्य, पूरी संपत्ति दे दें पर मैं चोरी करना नहीं छोड़ूँगा क्योंकि चोरी करने में मुझे आनन्द आता है। राजा ने उसे कड़े दण्ड की चेतावनी दी, पर विद्युतप्रभ नहीं माना।

एक दिन विद्युतप्रभ अपने 500 साथियों के साथ राजगृही नगरी में गया और गुप्त रूप से ठहरकर नगर में चोरियाँ करता रहा। एक दिन उसी नगर के धनवान सेठ जम्बूकुमार का विवाह हुआ। जम्बूकुमार तो विवाह नहीं करना चाहते थे, उनकी भावना तो दिगम्बर मुनिव्रत अंगीकार वनवास जाने की थी। उनके माता-पिता ने उन्हें समझाने का बहुत प्रयास किया पर वे नहीं माने। अंत में माता-पिता ने जम्बूकुमार से कहा - हम तुम्हें मुनिदीक्षा की आज्ञा दे देंगे, पर तुम्हें भी हमारी एक बात मानना होगी। तुम एक बार विवाह कर लो, उसके बाद तुम दीक्षा ले लेना। जम्बूकुमार मान गये और उनके पिता ने एक साथ चार कन्याओं से उसका विवाह करवा दिया। उन्हें लगा कि इन सुन्दर पत्नियों को पाकर उसका मन दीक्षा से हट जायेगा।

उसी रात्रि को विद्युतप्रभ चोरी करने के लिये अपने पाँचसौ साथियों के साथ जम्बूकुमार के घर पहुँचा। उसने जम्बूकुमार के कमरे में देखा कि विवाह की रात्रि में भी जम्बूकुमार वैराग्य और मुनिदीक्षा की बात कर रहे हैं । यह सुनकर उनकी पत्नियों और माता-पिता ने बहुत समझाने का प्रयास किया पर वे नहीं माने। माता-पिता बहुत दुःखी हो रहे थे। विद्युतप्रभ को यह दृश्य देखकर बहुत आश्चर्य हुआ। वह अपना चोरी करने का कार्य भूल गया। उसने जम्बूकुमार के माता-पिता के सामने प्रतिज्ञा की कि मैं कुमार को दीक्षा लेने से रोकने का प्रयास करूँगा और वह नहीं रोक सका तो स्वयं मुनि दीक्षा ले लूँगा। विद्युतप्रभ ने कुमार को समझाने पूरा प्रयास किया पर जम्बूकुमार अपने निर्णय पर अडिग रहे और उन्होंने सुबह होते ही मुनिदीक्षा ले ली। यह देखकर विद्युतप्रभ ने भी अपने 500 मित्रों के साथ मुनिदीक्षा ग्रहण की और अनेक उपसर्गों को सहन करते हुये घोर तप किया। जीवन के अन्त में समाधिमरणपूर्वक देह त्याग किया और स्वर्ग में अहमिन्द्र पद की प्राप्ति की।

मथुरा में इनके नाम से 500 स्तूप बनाये गये। इन 500 मुनिराजों के चिन्ह आज भी मथुरा में मिलते हैं।

आई मंगल घड़ी

छिंदवाड़ा, कारंजा शिवपुरी, दलपतपुर फुटेरा में सम्पन्न विभिन्न कार्यक्रमों की झलकियाँ

जिनशासन की प्रभावना निर्दोष हो स्वामी

कहान के बचपन के प्रेरक प्रसंग -

कहान की ईमानदारी

संवत् 1968 कानजी मुम्बई व्यापार का सामान लेने गये। दुकान के मालिक ने नौकर ने कानजी के माल में चुपचाप एक बोरी ज्यादा डाल दी और कानजी के पास धीरे से आकर बोला सेठ! लाओ, मेरा इनाम का एक रुपया। कानजी ने आश्चर्य से इसका कारण पूछा तो नौकर ने बताया कि मैंने सेठ को बिना बताये आपके माल में 50 रु. की एक बोरी ज्यादा डाल दी है। कानजी ने उसे प्यार से समझाया कि भाई! छोटे से जीवन के लिये खोटे काम अच्छे नहीं। जाओ! जाकर एक बोरी वापस लेकर सेठ को देकर आओ। कानजी की प्रभावशाली बातें सुनकर उसे अपनी गल्ती का एहसास हुआ। उसने रोते हुये सेठ से क्षमा मांगी और फिर कभी चोरी न करने की प्रतिज्ञा ली।

कानू की दृढ़ता

कानू की पढ़ाई छङ्गवीं तक हुई। कानू अत्यंत प्रतिभाशाली थे पर ज्योमेट्री में कमजोर थे। टीचर ने डांटा तो घर पर आकर रोये और माँ से बोले- माँ! मुझे इस पढ़ाई में आनन्द नहीं आता। इससे आत्मकल्याण नहीं हो सकता। तो माँ ने पाठशाला जाने की प्रेरणा दी। तब स्कूल के किसी साथी ने टीचर से शिकायत कर दी कि गुरुजी! ये कानू, स्थानक की पाठशाला में जाता है इसलिये ये ज्यामेट्री में कमजोर है। गुरुजी ने कानू से कहा - पहले स्कूल और फिर पाठशाला जाया करो। तब कानू ने साहस से कहा - नहीं गुरुजी! पहले पाठशाला बाद में स्कूल। जब वे सातवीं कक्षा में थे तब उनके गांव प्लेग की बीमारी फैल जाने से उनकी पढ़ाई छूट गई।

कानू का ध्येय

संवत् 1956 में कानू जब दस वर्ष के थे तब वे अपने बड़े भाई खुशालभाई के साथ गांव घूमने गये। घूमते हुये खुशालभाई ने कानू से कहा - मैं बड़ा होकर बड़ा व्यापारी बनूँगा। अपने घर में बहुत गरीबी है उसे दूर करुँगा। खुशाल भाई ने पूछा - कानू! तुम बड़े होकर क्या करोगे कानू गंभीर होकर बोले - मैं ऐसा काम करुँगा जो किसी ने नहीं किया।

वास्तव में कानू के दृढ़ संकल्प ने उसे आध्यात्म युग स्रष्टा गुरुदेवश्री कानजी स्वामी बना दिया।

बंदर और टी.वी.

सन्मति वन का वातावरण बहुत शांत था। सभी जानवर परपस्पर एक दूसरे का सम्मान करते थे। धर्म की चर्चा और गतिविधियों से सन्मति वन की प्रशंसा आसपास के अनेक जंगलों में होने लगी थी। यही सुनकर सन्मति वन में पड़ोस वाले जंगल से एक बंदर आया था। उसका नाम मिनमिन था। सन्मति वन में नया होने से उसके कोई दोस्त नहीं थे। वह बहुत बोर होने लगा था। सन्मति वन के जानवर रोज शाम को एक जगह जमा होकर स्वाध्याय किया करते थे। मिनमिन बंदर को लगता कि यहाँ सभी जानवरों के दोस्त हैं तो सभी कितने मिल जुल कर रहते हैंऔर हंसी मजाक भी करते हैं। पर ये रोज शाम को पेड़ के नीचे जमा होकर क्या करते हैं? आज जाकर देखूँगा आखिर वे सब करते क्या हैं? अपनी योजना के अनुसार वह उस दिन शाम को वह जानवरों के पीछे चुपचाप जाकर बैठ गया। वहाँ पण्डित हिरणजी 'मैं कौन हूँ' विषय पर प्रवचन कर रहे थे। पर आतमा की ये सुन्दर बातें मिनमिन की कुछ समझ में नहीं आ रहींथीं। उसे लगा कि ये न जाने किस लोक की बातें कर रहे हैं क्योंकि उसने धर्म की चर्चा सुनी ही नहीं थी। वह वापस अपने पेड़ पर आकर सोचने लगा – मैं अपना मनोरंजन कैसे करूँ? अचानक उसे याद आया कि शहर के बच्चे टी.वी. देखकर अपना समय बिताते हैं। यदि मैं भी एक टी.वी. ले आऊँ तो मेरी समस्या अपने आप समाप्त हो जायेगी। फिर मेरे भले ही मेरे कोई दोस्त न बनें तो भी टी.वी. मेरा सबसे अच्छा दोस्त होगा। दिन भर अलग–अलग चैनल पर कार्यक्रम देखूँगा और मैं सुखी हो जाऊँगा। ऐसा निर्णय कर वह शहर की ओर चल पड़ा।

शहर जाते समय उसे एक पेड़ के नीचे परम शांत मुद्रा के धारी मुनिराज दिखे। उनकी शांत मुद्रा देखकर वह सोचने लगा कि इनके पास तो मकान, परिवार तो है ही नहीं और कपड़े और टी.वी.भी नहीं हैं, फिर भी इतनी शांति और सौम्यता कैसे ? बिना टी.वी. के इतने सुखी ! यह तो बड़ा आश्चर्य है। अरे ! ये मैं किस सोच में पड़ गया। मैं तो टी.वी. अवश्य लाऊँगा। यह सोचकर वह और आगे बढता गया। वह नगर पहुँचा तो पानी पाने के लिये एक घर में पहुँच गया। खिड़की से झांककर देखा तो अंदर तीन बच्चे टी.वी. देख रहे थे। तभी उनमें से एक लड़का अपनी बहन से बोला– मुझे सोनी चैनल पर मैच देखना है रिमोट मुझे दो। बहन बोली– नहीं पहले मैं स्टार प्लस का सीरियल देखूँगी बाद में तुझे मैच देखने दूँगी। इतने में दूसरा भाई बोला – तुम दोनो हटो। अब मैं पोगो चैनल देखूँगा, मेरा फेवरेट कार्टून शो आने वाला है। इस बात पर तीनों में झगड़ा होने लगा। गुस्से में छोटे लड़के ने अपनी बहन को चांटा मार दिया, बहन ने गुस्से में उसे गाल में काट लिया। बडे भाई ने बहन की चोटी पकड़ के खीचीं। इस तरह तीनों में बहुत जोर–जोर से झगड़ा होने लगा। इतने में छोटे भाई ने रिमोट छीनकर टी.वी. पर मार दिया तो टी.वी. फूट गई। बहन की नाक से खून निकलने लगा। इतने में मम्मी बाजार से लौटींतो घर का दश्य देखकर बहुत दुःखी हुईं और तीनों को पिटाई लगाई।

बंदर ने यह सारी घटना देखी तो उसका मन कांप गया। उसने सोचा – यदि मैंटी.वी. ले जाऊँगा तो धीरे–धीरे मेरे दोस्त बन जायेंगे और वहाँ भी झगड़ा होने लगा तो सन्मति वन की शांति भंग हो जायेगी। नहीं नहीं ! मैंऐसा पाप नहीं करूँगा। मैं टी.वी. नहीं लाऊँगा और हर जंगल में जाकर सबको बताऊँगा कि टी.वी. से क्या–क्या हानियाँ हैं ?

इसके बाद सन्मति वन गया और रोज शाम को होने वाले स्वाध्याय में बैठने लगा और हर रविवार को मंदिर जी में पूजा में भाग लेने लगा। इस तरह उसके बहुत सारे दोस्त हो गये। वह भी उनके साथ धर्म की चर्चा करने लगा। अब उसे शांति के साथ आनंद भी आने लगा।

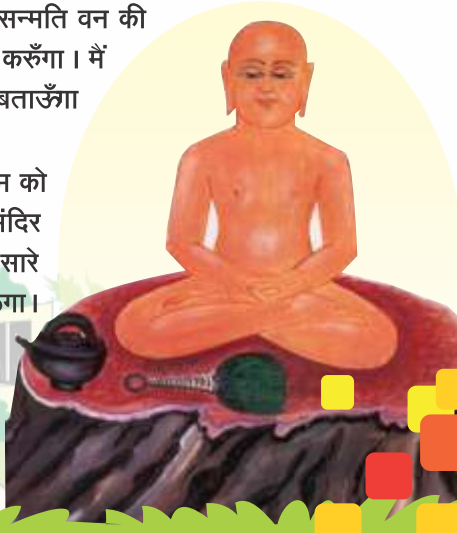

पत्ता गोभी.....
न बाबा न...

जीभ के स्वाद के लोभ में हम सर्वज्ञ परमात्मा की बात तो मानते ही नहीं, अपने जीवन से भी खिलवाड़ करते हैं और कभी-कभी यह जीभ के कुछ सेकेण्ड का स्वाद मृत्यु का कारण भी बन जाता है। वैसे तो जमीकन्द आलू प्याज आदि में अनन्त एकेन्द्रिय जीव होते हैं इसलिये जिनवाणी जमीकन्द न खाने की प्रेरणा देती है, साथ ही अनेक सब्जियाँ ऐसी हैं जिनमें भी जीव होते हैं। ऐसे ही गोभी बहुत अभक्ष्य सब्जी है। फूल गोभी में तो 1 इन्द्रिय से 4 इन्द्रिय तक के जीव होते हैं परन्तु पत्ता गोभी भी अभक्ष्य होने के साथ मरण का भी कारण बन सकती है।

डॉ. अव्यक्त अग्रवाल के पास एक व्यक्ति अपने 7 वर्ष के बेहोश बालक लेकर आया और बताया कि उसका बेटा बिल्कुल स्वस्थ था परन्तु अचानक उसे अचानक चक्कर आ गये और वह गिर गया, उसकी आंखें चढ़ गईं। तब डॉक्टर ने उसे प्राथमिक इलाज दिया और उसका सीटीस्केन कराया तो देखा कि बालक के दिमाग में एक हिस्से में एक गांठ दिख रही थी। बारीकी से जांच से करने पर पता चला कि यह एक प्रकार का कीड़ा है जो - टीनिया सोलियम (टेपवर्म यानी फीताकृमि) के लार्वा से पैदा हुआ है। यह भोजन के साथ पेट में पहुँचता है। इसके कारण बच्चों और बड़ों में मिर्गी जैसे दौरे पड़ते हैं इसे मेडिकल भाषा में ' न्यूरोसिस्टिसेरसोसिस' नाम की बीमारी कहते हैं।

यह सुनकर बच्चे के पिता को आश्चर्य हुआ कि उनका बेटा घर के भोजन के अलावा बाहर का कुछ भी नहीं खाता-पीता। फिर यह कीड़ा बेटे के दिमाग में कैसे पहुँच गया ? तब डॉ. अव्यक्त ने बताया कि यह कीड़ा पालक, पत्ता गोभी, फूलगोभी की परतों में छुपा होता है। कई बार सब्जी धोते समय भी यह कीड़ा दिखता नहीं और भोजन के साथ पेट में पहुँच जाता है। टेपवर्म या उसके अंडे के पेट में पहुँचने पर उसके लार्वा बनते हैं। एक दिन में यह टेपवर्म एक लाख अण्डे दे सकता है, जिनमें से कुछ छोटे लार्वा बन सकते हैं।

एक टेपवर्म 50 फुट लम्बा भी हो सकता है।

यदि ये खून में पहुँच जाये तो खून के साथ बहकर लिवर, ब्रेन, मांसपेशियों, स्पाइनल कॉर्ड या आंखों में पहुँच सकते हैं। जिस अंग में लार्वा पहुँचेगा वह उस अंग को प्रभावित करता है। जैसे आंख में होने पर अंधा कर सकता है, दिमाग में होने पर झटके आ सकते हैं, बेहोशी हो सकती है और ये अधिक संख्या में हुये तो मस्तिष्क की क्षमता में कमी आ सकती है और मृत्यु भी हो सकती है।

हमारे पास गोभी के टेपवर्म के आंख में पहुँचने की फोटो और वीडियो भी उपलब्ध हैं। अब आपको निर्णय करना है कि जीवन की सुरक्षा करना है या स्वाद के लोभ को पूरा करना है।

स्नेह हो तो ऐसा

कई वर्षों पूर्व एक नगर में एक व्यापारी के दो पुत्र थे। दोनों ही जैनधर्म पर बहुत श्रद्धा रखते थे परन्तु उनमें से बड़ा भाई की जैन धर्म पर दृढ़ श्रद्धा थी, परन्तु छोटा भाई गलत संगति के कारण गलत काम करने लगा। कई - कई दिन छोटा भाई घर से बाहर रहने लगा। उसे बड़े भाई ने बहुत समझाया पर उसे समझ नहीं आया। एक दिन बड़ा भाई जिनमंदिर दर्शन के लिये जा रहा था तब छोटा भाई सामने आ गया उसने बड़े भाई से पूछा - आप कहाँ जा रहे हैं ? तो बड़े भाई ने जबाब दिया - मैं जिनमंदिर जा रहा हूँ और तुम्हें तो पता है कि मैं जिनेन्द्र के दर्शन बिना आहार-पानी नहीं लेता।

छोटे भाई की होनहार अच्छी थी तो वह स्वयं बड़े भाई के साथ जिनमंदिर जाने के लिये तैयार हो गया। रास्ते में बड़े भाई ने जिनमंदिर की एवं जिनेन्द्र भगवान की महिमा बताई और मनुष्य भव की दुर्लभता बताई। यह सुनकर छोटे भाई को जैन धर्म की बहुत महिमा आई और उस प्रतिदिन जिनमंदिर जाने लगा। उसकी गलत संगति भी छूट गई और उसे बड़े भाई को धन्यवाद दिया। एक दिन जिनमंदिर में दिगम्बर मुनिराज पधारे। दोनों भाईयों ने अत्यंत भक्ति से मुनिराज की वंदना की। मुनिराज ने दोनों की सुन्दर भविष्य जानकर उन्हें धर्म उपदेश दिया और दोनों ने भाई श्रावक के व्रत ग्रहण किये। जिनमंदिर से लौटते समय छोटे भाई ने बड़े भाई से कहा - भैया ! हम एक दूसरे वादा करें

कि हम दोनों में से जो भी पहले संसार छोड़ कर कहीं भी जायेगा तो वहाँ से दूसरे भाई को धर्म के लिये प्रेरित करता रहेगा।

कुछ समय बाद बड़े भाई का देहांत हो गया और वह मरकर देव बन गया और छोटा भाई मरकर पुनः मनुष्य बन गया और राजा श्रीकण्ठ हुआ।

एक बार अष्टान्हिका पर्व में राजा श्रीकण्ठ अपने महल की छत पर घूम रहे थे, उनके साथ उनके मंत्री भी थे। उन्होंने आसमान में देखा तो देव विमान से जा रहे थे। मंत्री से पूछने पर उसने बताया कि देव अपने विमानों से नन्दीश्वर द्वीप के जिनमंदिरों के दर्शन के लिये जा रहे हैं। यह देखकर श्रीकण्ठ राजा को पूर्व भव की स्मृति हो गई और उस देव विमान में उसका पूर्व भव का बड़ा भाई भी था और वह अब देव पर्याय में था। वह देव का विमान भी अपने आप रुक गया। उसने अपने पूर्व के भाई को देखा जो अब श्रीकण्ठ की पर्याय में था। देव भी अपने पूर्व भव के भाई को पहचान गया। उसे पूर्व की प्रतिज्ञा याद आई उसने श्रीकण्ठ राजा को धर्म की प्रेरणा दी। फिर श्रीकण्ठ राजा ने उस देव से नन्दीश्वर द्वीप की वन्दना कराने के लिये कहा। स्नेह के कारण देव ने श्रीकण्ठ राजा को अपने विमान में बिठा लिया और आकाश मार्ग से चल पड़ा। रास्ते में मानुषोत्तर पर्वत आते ही विमान रुक गया। तब देव को स्मरण हुआ कि मनुष्य इस मानुषोत्तर पर्वत के आगे नहीं जा सकते। यह जानकर श्रीकण्ठ राजा को वैराग्य हो गया और वहीं पर विराजमान मुनि भगवंत के पास मुनिदीक्षा धारण कर ली और आत्म आराधना में लीन होकर तप करने लगे।

भाईयों के धर्म स्नेह से जीवन सफल हो गया।

आप मुझे संस्कार दो, मैं आपको सेवा और समाधि दूँगा

(एक गर्भवती स्त्री को ऐसा एहसास हुआ कि उसके गर्भ में पल रहा उसका बच्चा उससे बात कर रहा है)

माँ मैं हूँ आपका बेटा...! माँ मुझे बहुत मुश्किल से मनुष्य पर्याय मिल रही है। मैंने पशु बनकर बहुत दुःख उठाये हैं माँ! मुझे बांधा जाता था, मारा जाता था, मुझे कभी भरपेट भोजन नहीं मिलता था और दिन भर काम। मैं रोता रहता था पर मेरी कोई सुनने वाला ही नहीं था। कभी बड़े जानवरों द्वारा मारा गया तो कभी अपने मालिक से कई बार पिटा। माँ ! मैं कैसे उन दुःखों को कहूँ....।

और माँ जब मैं नरक में था तो वहाँ की तो याद करके ही मेरे रोंगटे खड़े हो जाते हैं, हर तरफ मारकाट, दुःखों की असहनीय वेदना। चारों तरफ खून ही खून। पापों की ऐसी सजा... जिसके बारे में सोचकर ही पसीना आ जाता है। असुर कुमार जाति के देव सबको लड़वाने में ही आनन्द मनाते हैं। और माँ....! वहाँ की गर्मी इतनी कि विशाल पर्वत के समान लोहे के गोले एक सेकेण्ड में गल जायें, जब मुझे गर्मी लगती तो मैं ठण्डक के लिये नदी में कूद जाता पर माँ! वो पानी की नदी थी ही नहीं, वह तो खून से भरी हुई थी और चारों तरफ भयंकर मगरमच्छ... मुझे सैकड़ों बार मारा गया, मरने की तो वहाँ व्यवस्था ही नहीं है।शरीर टुकड़े-टुकड़े हो जाता और फिर मिल जाता। चौबीस घंटे हिंसा, खून.. लड़ाई .. एक मिनिट की भी शांति नहीं..। माँ! मैं नरक के दुःख अनन्त काल तक कहूँ तो भी पूरे नहीं होंगे। इतनी वेदना मैंने सहन की।

माँ! मैं स्वर्ग भी गया। पहले लगता था कि सबसे अधिक सुख स्वर्ग में ही है। वहाँ के देव बनकर मजा ही मजा। वहाँ कोई काम नहीं, बस भोग, घूमना, आनन्द ही आनन्द...पर यह तो मेरा भ्रम ही था। जब मैं पुण्य के परिणामों के कारण स्वर्ग पहुँचा तो कुछ समय तो अच्छा लगा। पर वहाँ भी इन्द्रियों की तृष्णा और भोगों की प्यास। मानसिक वेदना। हमेशा अपने से बड़े इन्द्र की आज्ञा में रहने का दुःख और मरण से छः माह पहले मरण की भयंकर आकुलता।

माँ! मैं तो पहले भी कई बार मनुष्य बन चुका हूँ। पर कभी ऐसी जगह में जन्म लिया जहाँ धर्म की चर्चा भी नहीं होती थी, कई बार कुदेवों और कुगुरुओं की सेवा में पूरा जीवन बीत गया। कई बार तो माँ के गर्भ में ही मेरा मरण हो गया, कभी अपंग, तो कभी गरीबी तो कभी कोई समस्या के कारण पूरा जीवन बरबाद हो गया। मुझे जैन कुल भी मिला माँ! पर मेरे उस भव के माता-पिता ने कभी जिनधर्म के संस्कार ही नहीं दिये, बस धन, परिवार, समाज की चिन्ता में पूरा जीवन नष्ट कर दिया।

माँ! मुझे महाभाग्य से फिर से जैन कुल में जन्म लेने का अवसर मिला है। माँ! मैं अपना यह मनुष्य भव बरबाद नहीं करना चाहता। मैं पंचपरमेष्ठी की शरण में जाकर आत्मकल्याण करना चाहता हूँ। पर माँ! मैं आपके और पिताजी के आशीर्वाद और सहयोग के बिना कुछ नहीं कर पाऊँगा। आप मुझे जिनधर्म के संस्कार देना। यह जीवन धन, परिवार और भोग के लिये नहीं बल्कि जिनधर्म के आचरण के लिये मिला है।

यदि मैं कभी गलत रास्ते पर चलूँ तो मुझे डांटकर सही रास्ता दिखाना। मुझे धन की महिमा नहीं बल्कि धर्म का गौरव दिखलाना। मैं वादा करता हूँ माँ! मैं सदा आपके सुख-दुःख में साथ रहूँगा। मैं आपके जीवन के अंत समय में जिनधर्म के मंत्र सुनाऊँगा। कभी आपको निराश नहीं होने दूँगा, आपको जिनवाणी के अमर मंत्रों से आतमा का बल दिखलाऊँगा और आपके आशीर्वाद से मैं भी इसी जिनशासन के मार्ग पर चलूँगा और आत्मकल्याण करूँगा। आप अपने बेटे का भविष्य उज्ज्वल करोगी ना माँ...!

"अब नहीं" पुस्तक का विमोचन

आचार्य कुन्दकुन्द सर्वोदय फाउन्डेशन जबलपुर बाल-युवा वर्ग में जिनधर्म के संस्कार समाहित करने के उद्देश्य से निरन्तर कार्य किये जा रहे हैं। इस क्रम में प्रेरणादायक 14 नाटकों के संग्रह के रूप में विराग शास्त्री द्वारा लिखित **अब नहीं** पुस्तक का प्रकाशन किया गया है। इस नवीन पुस्तक का विमोचन ग्वालियर पंचकल्याणक के अवसर पर श्री वीरेन्द्रजी लखनऊ के कर कमलों से हुआ।

चहकती चेतना की सदस्यता अब पेटीएम से भी

चहकती चेतना का लाभ सभी को सरलता से मिल सके और सभी आसानी से इसके **सदस्य बन सकें - पेटीएम भुगतान सुविधा** प्रारम्भ की गई है। अब आप सदस्यता शुल्क 9300642434 पर पेटीएम से भी जमा कर सकते हैं। आप राशि बैंक अथवा पेटीएम से जमा कर अपना पूरा पता हमें व्हाटएप / करें।

सदस्यता - 500/- तीन वर्ष, 1500/- दस वर्ष हेतु

छिंदवाड़ा के श्री आदिनाथ जिनालय का रजत जयंती वर्ष गरिमापूर्ण ढंग से सम्पन्न

मध्यप्रदेश की धर्मप्रिय नगरी में छिन्दवाड़ा के गोलगंज में स्थित श्री आदिनाथ जिनालय के स्थापना के 25वर्ष पूर्ण होने पर रजत जयंती वर्ष के अन्तर्गत विशेष कार्यक्रम आयोजित हुआ। दिनांक 7 फरवरी से 11 फरवरी तक आयोजित इस कार्यक्रम में चार विधानों का आयोजन हुआ। रात्रि में इन्द्रसभा, राजसभा के कार्यक्रम के साथ डॉ. विवेक जैन और श्री सचिनजी के मार्गदर्शन में पण्डित बनारसीदास के जीवन पर आधारित नाटक की प्रभावशाली प्रस्तुति की गई। अंतिम दिन विख्यात विद्वान स्व. डॉ. उत्तमचन्दजी जैन की स्मृति में संस्कार सुधा पत्रिका के विशेषांक का विमोचन हुआ, साथ ही छिन्दवाड़ा मुमुक्षु मण्डल की संस्थापिका धर्ममाता श्रीमति कुसुम शांतिकुमारजी पाटनी का विशेष अभिनन्दन किया गया।

इस अवसर पर देवलाली से पधारे पण्डित अभयकुमारजी, पण्डित सौरभ शास्त्री इंदौर के व्याख्यानों का लाभ प्राप्त हुआ। प्रतिदिन दोपहर में श्री विराग शास्त्री द्वारा कक्षा ली गई। कार्यक्रम के अंतिम दिन विशाल शोभायात्रा निकाली गई। युवाओं के अभूतपूर्व उत्साह से कार्यक्रम जीवन्त हो गया। फैडरेशन सचिव श्री दीपकराज के विशेष प्रयासों से प्रिन्ट मीडिया ने इस कार्यक्रम के समाचारों को महत्वपूर्ण स्थान दिया।

सम्पूर्ण कार्यक्रम श्री विराग शास्त्री, जबलपुर के निर्देशन और श्री अशोक वैभव, पण्डित ऋषभ शास्त्री के मागदर्शन में संपन्न हुआ।

शिवपुरी में जिनमंदिर का वार्षिकोत्सव सानंद सम्पन्न

मध्यप्रदेश के शिवपुरी नगर में श्री वासुपूज्य जिनालय का 6वाँ वार्षिकोत्सव एवं गुरुवाणी मन्थन शिविर सानन्द संपन्न हुआ। दिनांक 9 जनवरी से 13 जनवरी तक आयोजित इस अवसर पर श्री नियमसार मण्डल विधान का मंगल आयोजन हुआ। प्रतिदिन तीनों समय पूज्य गुरूदेवश्री के प्रवचनों के आधार पर पण्डित श्री वीरेन्द्रकुमारजी आगरा के प्रवचनों का और प्रतिदिन दोपहर में श्री विराग शास्त्री के प्रवचनों लाभ प्राप्त हुआ। सम्पूर्ण कार्यक्रम श्री विराग शास्त्री के निर्देशन और मंडल अध्यक्ष श्री जयकुमारजी और विद्वान ब्र. सुनीलजी शास्त्री के मार्गदर्शन में संपन्न हुये।

कारंजा में विद्वत् गोष्ठी का मंगल आयोजन संपन्न -

प्रसिद्ध प्राचीन नगरी कारंजा में स्थित श्री महावीर ब्रह्मचर्य आश्रम के 100 वर्ष पूर्ण होने के उपलक्ष्य में शताब्दी कार्यक्रमों के अन्तर्गत विद्वत् गोष्ठी का सफल आयोजन हुआ। दिनांक 1 फरवरी से 3 फरवरी तक आयोजित इस कार्यक्रम में डॉ. राकेश शास्त्री, नागपुर के मुख्य संयोजकत्व में आयोजित इस संगोष्ठी में आगम के आधार से विभिन्न विषयों पर देश के विभिन्न नगरों से पधारे 50 से अधिक विद्वानों ने आलेख प्रस्तुत किये। इस कार्यक्रम में पण्डित आलोकजी शास्त्री की महत्वपूर्ण भूमिका रही।

ग्वालियर में पंचकल्याणक महोत्सव ऐतिहासिक रूप से संपन्न

सिद्धक्षेत्र गोपाचल से सुशोभित नगरी ग्वालियर के अंचल तिघरा में नवनिर्मित श्री महावीर स्वामी दिगम्बर जिनमंदिर का श्री 1008 पार्श्वनाथ दिगम्बर जिनबिम्ब पंचकल्याणक प्रतिष्ठा महोत्सव जिनशासन की गरिमा के साथ संपन्न हुआ। श्री दिगम्बर जैन मुमुक्षु मण्डल, ग्रेटर, ग्वालियर के तत्वावधान में 16 जनवरी 2019 से 21 जनवरी 2019 तक आयोजित इस कार्यक्रम में अनेक विद्वानों के प्रवचनों का लाभ प्राप्त हुआ। इस महोत्सव में माता पिता बनने का सौभाग्य श्रीमति रीटा सुशील कुमारजी ग्वालियर और सौधर्म इन्द्र - शची इन्द्राणी बनने का सौभाग्य श्री धीरेन्द्रजी-सोनियाजी कोलकाता को प्राप्त हुआ। कार्यक्रम में मंच संचालन सुप्रसिद्ध विद्वान पण्डित संजय शास्त्री ने किया। सह संयोजक के रूप में श्री विराग शास्त्री जबलपुर और पण्डित सुबोध शास्त्री, शाहगढ़ में अपना महत्वपूर्ण योगदान दिया। पंचकल्याणक के सम्पूर्ण विधि विधान बाल ब्र. अभिनन्दन कुमारजी देवलाली के प्रतिष्ठाचार्यत्व में श्री विवेक शास्त्री इंदौर, पण्डित सुनील धवल भोपाल के सहयोग से संपन्न हुये। कार्यक्रम में सकल दिगम्बर जैन समाज का सराहनीय योगदान रहा। साथ ही संयोजक श्री मनोज जैन और श्री अजित जैन का अथक श्रम भी सराहनीय रहा ।

छहढ़ालाः संगीतमयी शाम

मेरठ के एक श्रेष्ठी ने एक आदर्श प्रस्तुत करते हुये पारिवारिक विवाह समारोह के पूर्व फिल्मी संगीत संध्या के स्थान पर छहढ़ाला गायन का कार्यक्रम किया। 19 जनवरी को हस्तिनापुर में आयोजित इस कार्यक्रम में जबलपुर से आये कलाकारों ने अत्यंत मधुर और प्रभावशाली संगीतमयी कार्यक्रम किया। प्रत्येक छन्द के पश्चात् सौरभ शास्त्री इंदौर ने अपनी मनमोहक आवाज में अर्थ प्रस्तुत किया। लगभग 2 घंटे चले इस कार्यक्रम में लगभग 300 साधर्मियों ने लाभ लिया। इस कार्यक्रम का संयोजन विराग शास्त्री, जबलपुर और मार्गदर्शन पण्डित गौरव शास्त्री इंदौर ने किया।

दलपतपुर में वेदी प्रतिष्ठा महोत्सव सानंद संपन्न

मध्यप्रदेश में स्थित सिद्धक्षेत्र नैनागिर से 20 किमी दूरी पर स्थित ग्राम दलपतपुर में नवनिर्मित श्री महावीर स्वामी दिगम्बर जिनमंदिर में जिनप्रतिमाओं का वेदी प्रतिष्ठा महोत्सव सम्पूर्ण विधि विधान से संपन्न हुआ। दिनांक 25 जनवरी से 27 जनवरी तक आयोजित इस कार्यक्रम में यागमण्डल विधान के पश्चात् मंगल कलशों से वेदी की शुद्धि की गई। इस अवसर अनेक विद्वानों के द्वारा स्वाध्याय का लाभ प्राप्त हुआ। महोत्सव के सम्पूर्ण विधि विधान बाल ब्र. जतीशचन्दजी शास्त्री, दिल्ली के द्वारा और कार्यक्रम पण्डित विवेक शास्त्री के निर्देशन में संपन्न हुआ।

- महेन्द्र चौधरी-अध्यक्ष, विनोद मोदी-मंत्री

जैन जगत के शिरोमणि विद्वान पण्डित ज्ञानचंदजी जैन विदिशा का देह विलय

सम्पूर्ण अध्यात्म प्रेमी समाज को अपनी मधुर वाणी और सरल शैली से सम्मोहित करने वाले विद्वान बाबू पण्डित ज्ञानचन्दजी जैन विदिशा का 84 वर्ष की आयु में दिनांक 28 जनवरी को अत्यंत सरल परिणामों से निधन हो गया। असाध्य बीमारी में उचित निर्णय लेकर बाबूजी ने समाधि की भावना व्यक्त की और 22 जनवरी से ही भोजन का त्याग कर दिया और पूरे समय आत्म कल्याणकारी मंत्रों का स्मरण करते रहे। इस कार्य में उनके पूरे परिवार ने उनकी पूरी सेवा कर उनकी भावना को सार्थक करने का प्रयास किया।

चहकती चेतना परिवार ऐसे महामना व्यक्तित्व पण्डित श्री ज्ञानचन्दजी के प्रति भावांजलि व्यक्त करते हुये उनके अविराम भव विराम की मंगल कामना करता है।

कोई लाख करे चतुराई करम का लेख मिटे न रे भाई

पाप के उदय भोग रहे ये इंसान
हमें पापों से बचने की प्रेरणा दे रहे हैं ।

इनके दुःख को ये ही समझ सकते हैं ।

एक भारतीय बच्चा जिसके हारमोन्स डिसआर्डर के कारण इसके पूरे चेहरे पर बाल हैं।

10 वर्ष का आर्य परमाना । एक बीमारी के कारण इसका वजन 192 किलो हो गया है।

एक दुर्लभ बीमारी के कारण इसका हाथ 20 किलो का हो गया। हाथ के वजन के कारण यह 10 मिनिट चलकर ही थकान हो जाती है।

एक ऐसी महिला जिसके न हाथ न पैर। इसे एक बर्तन में रखकर पाला जा रहा है।

एक बच्चे का पिता जिसके हाथ और पैर दोनों ही नहीं है।

साहसी महिला लिंडसे। इसके पैर न होने पर भी यह जिम्नास्ट की चैम्पियन बनीं।

मात्र 11 वर्ष की बच्ची बीमारी के कारण बूढ़ी लगने लगी।

6 फरवरी 2019 को सार्थ के जन्मोत्सव पर हार्दिक शुभकामनायें।

मानव कुल उत्तम मिला, स्वागत करते सार्थ।
देव शास्त्र गुरु शरण से, सिद्ध करो परमार्थ।।

श्री धूलचंद - धुलीदेवी जैन मुंबई
(दादा-दादी)

दीना - अजीत जैन
माता-पिता
महावीर इलेक्ट्रानिक्स, मलाड मुम्बई

जवेरचंद जैन - श्रीमती केशरदेवी हथाया
(नाना-नानी) ग्रांट रोड, मुम्बई

जन्मदिवस की मंगल शुभकामनायें

ईर्या जिनपथ श्रेष्ठ है, कर इसका सन्मान।
दिव्य ध्वनि का श्रवण कर, करो आत्म कल्याण।।

ईर्या विराग जैन, जबलपुर 27 अप्रेल 2019

जन्म मरण के अभाव की भावना में ही जन्म दिन मनाने की सार्थकता है।

इस कॉलम में अपने बच्चों के जन्मदिवस पर शुभकामनायें प्रकाशित करवाईये।
नाम सहित फोटो 9300642434 पर व्हॉट्सएप करें।

मंगल आमंत्रण **चलो सोनागिर** अवश्य पधारिये

नंग अनंग कुमार आदि साढ़े पाँच करोड़ मुनिराजों की निर्वाण भूमि और
भगवान चन्द्रप्रभ के समवशरण सहित विहार भूमि सिद्धक्षेत्र सोनागिर के पवित्र तलहटी में
आध्यात्मिक सत्पुरुष गुरुदेवश्री कानजी स्वामी के तत्व प्रभावना योग में

42वाँ आध्यात्मिक शिक्षण शिविर

रविवार, 21 जुलाई से रविवार 28 जुलाई 2019 तक

स्थान – सिद्धक्षेत्र सोनागिर, जि. दतिया म.प्र.

शिविर एक : लाभ अनेक

- पवित्र भूमि सिद्धक्षेत्र सोनागिर के पर्वत पर विराजमान और तलहटी के अनेक
- भव्य जिनमंदिरों के दर्शन का अनुपम लाभ जिनेन्द्र पूजन और विधानों के माध्यम से जिनेन्द्र स्तवन
- पूज्य गुरुदेवश्री के भवतापहारी वाणी का लाभ देश के उच्चकोटि के विद्वानों के द्वारा
- आध्यात्मिक प्रवचनों का लाभ वरिष्ठ और युवा विद्वानों के द्वारा जिनागमीय विषयों पर गोष्ठियाँ
- सिद्धक्षेत्र पर साधर्मी मिलन का अद्भुत अवसर

भक्ति-ज्ञान-आध्यात्म की त्रिवेणी में स्नान के मंगल महोत्सव में
पधारने का कार्यक्रम आज ही सुनिश्चित करें।

आयोजक – श्री कुन्दकुन्द कहान दिगम्बर जैन तीर्थ सुरक्षा ट्रस्ट, मुम्बई
पंजीयन हेतु संपर्क – सुनील भाई शाह, भायंदर, मुम्बई 9820120009

दवा कब खाना ?

पत्नी हमेशा धर्म विमुख पति को धर्म प्रेरणा देती रहती थी तो पति ने कहा - अभी तो कमाने-खाने और ऐशो-आराम के दिन हैं, अभी धर्म करने की क्या जल्दी है ? वह तो बुढ़ापे की करने चीज है।

एक बार पति बीमार पड़ गया तो उसने अपनी पत्नी से दवा लाने को कहा। पत्नी ने कहा - दवा खाने की इतनी जल्दी क्या है? इसे बुढ़ापे में खा लेना। यह सुनकर पति को गुस्सा आ गया और बोला - अरी मूर्ख! क्या मरने बाद दवा खिलायेगी? पत्नी ने कहा - जब रोग के इलाज के लिये तुरन्त दवा खाने की आवश्यकता है ऐसे इस संसार में मिथ्यात्व और कषाय के रोग से मुक्त होने के लिये तुरन्त धर्म की दवा खाना चाहिये।

पत्नी का इशारा पति तुरन्त समझ गया।

ग्रीष्मकालीन अवकाश :

चैतन्य भास्कर के साथ
एक अभिनव राष्ट्रीय प्रतियोगिता

- जिनधर्म पर आधारित राष्ट्रीय स्तर पर नवीन विधा की एक रोचक प्रतियोगिता
- 12 पृष्ठीय चैतन्य भास्कर न्यूज पेपर दिये गये निर्देशों से भरिये।
- तीन आयु वर्ग में और हिन्दी, अंग्रेजी, मराठी, गुजराती, कन्नड़ और तमिल भाषा में
- जीतिये ढ़ेरों पुरस्कार
- अपनी प्रतिभा निखारने का अपूर्व अवसर
- सभी प्रतिभागियों को प्रमाण पत्र

शिविरों, पाठशालाओं और संस्थाओं को विशेष छूट पर उपलब्ध

मात्र 30/- रु.

तो देर किस बात की राशि का भुगतान हमारे खाते में या
पेटीएम से 9300642434 पर भुगतान करें
हमें अपना पता एस एम एस या व्हाट्सएप करें और पायें घर बैठे चैतन्य भास्कर

अपनी प्रति आज ही सुरक्षित करायें। कहीं चूक न जायें।

संपादक : विराग शास्त्री, जबलपुर
चैतन्य भास्कर आपको अप्रेल माह में भेजा जायेगा।

चहकती चेतना का वर्ष 2019-2020
रंगीन केलेण्डर प्रकाशित

प्रतिवर्ष प्रकाशित होने वाला चहकती चेतना का वर्ष 2019-2020 का रंगीन केलेण्डर शीघ्र प्रकाशित हो गया है। यह केलेण्डर अप्रेल 2019 से मार्च 2020 तक की तिथियों वाला है। इसमें तीर्थंकरों के कल्याणक, अष्टमी-चतुर्दशी आदि धार्मिक पर्व, राष्ट्रीय त्यौहारों की तिथियाँ विशेषता से दी गईं हैं। इस बार का केलेण्डर उन पशुओं की कथाओं पर आधारित है जिन्होंने अपने जीवन में धर्म के आश्रय से कोई विशिष्ट उपलब्धि प्राप्त की। इन पशुओं के चित्रों के साथ प्रासंगिक पौराणिक घटना का उल्लेख किया गया है। इससे सभी को पौराणिक घटनाओं के माध्यम से धर्म मार्ग में प्रवृत्त होने की प्रेरणा मिलेगी।

यह केलेण्डर चहकती चेतना के 15 वर्षीय सदस्यता वालों को निःशुल्क भेजा जायेगा। अन्य सदस्य 40/- रु. में कोरियर व्यय सहित, 20 रु.में **(जबलपुर कार्यालय से प्राप्त करने पर) प्राप्त किया जा सकेगा। केलेण्डर राशि का भुगतान आप हमारे बैंक खाते में अथवा 9300642434 पर पेटीएम द्वारा भी कर सकते हैं।**

यह केलेण्डर पारिवारिक समारोह, धार्मिक आयोजन में वितरण हेतु श्रेष्ठ विकल्प है।

पूज्य गुरुदेव श्री कानजी स्वामी की साधना भूमि सुवर्णपुरी सोनगढ़ की पावन धरा पर अद्वितीय दर्शनीय केन्द्र

गुरु कहान कला संग्रहालय

- देश के ख्याति प्राप्त चित्रकारों तथा शिल्पकारों द्वारा जैन सिद्धांतों के आधार पर निर्मित अनुपम चित्र एवं शिल्प
- आचार्य कुन्दकुन्द द्वारा रचित जैन शासन के महान ग्रन्थ समयसार में वर्णित गाथाओं एवं आचार्य अमृतचंद्र सूरि द्वारा प्रणीत आत्मख्याति टीका में समागत दृष्टान्तों और सिद्धांतों का प्रभावशाली कलात्मक प्रयोग
- बारह भावना, दश धर्म, भक्तामर स्तोत्र, भरतेश वैभव आदि अनेक विषयों पर आधारित अनेक चित्रपट एवं पाषाण शिल्प
- जिनागम के अनेक सिद्धांतों के रहस्यों को चित्रों द्वारा जीवंत अभिव्यक्ति समझाने का अद्भुत प्रयास
- अध्यात्म युगस्रष्टा पूज्य गुरुदेवश्री एवं स्वानुभव विभूषित बेनश्री के जीवन के विभिन्न आयामों का दिग्दर्शन और उनके द्वारा उद्घाटित जिनवाणी के संदेशों पर आधारित सुंदर चित्र एवं शिल्प
- प्रत्येक तीसरे माह में अथवा विशेष प्रसंग पर नई परिकल्पना पर आधारित परिवर्तन
- संग्रहालय में प्रदर्शित चित्रों एवं शिल्पों की भावानुभूति कराने के लिये कुशल विद्वान की सेवा उपलब्ध
- किशोर एवं युवा वर्ग के लिये आधुनिक भाषा में जैन सिद्धांतों को प्रदर्शित करता एक बेमिसाल केन्द्र

एक अलौकिक मंगल अनुभूति के लिये.... अवश्य पधारिये ।

गुरु कहान कला संग्रहालय श्री दिगम्बर जैन स्वाध्याय मंदिर संकुल, तीर्थधाम सोनगढ़, जिला - भावनगर (सौराष्ट्र) गुजरात मोबा. 8209571103

www.gurukahanmuseum.org : info@gurukahanmuseum.org www.facebook.com/gurukahanmuseum

निवेदक - श्री कुन्दकुन्द कहान पारमार्थिक ट्रस्ट, विले पारले, मुम्बई-56 022-26130820, 26104912